JULY TO SEPTEMBER 2018-19

आगामी तीन माह की प्रस्तावित गतिविधियाँ

प्रक्षेत्र परीक्षण

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (हे.)	लाभार्थी
1.	धान	राजेश्वरी	धान की कतार बोनी में फसल प्रबंधन का आकलन	0.8	04
2.	सोयाबीन	जे.एस.95-60	रेज्ड बेड प्लांटर से सोयाबीन की बुवाई का आकलन	1.0	05
3.	सोयाबीन	जे.एस.97-52	सोयाबीन में खरपतवार नाशियों से खरपतवार प्रबंधन का आकलन	0.8	04
4.	प्याज	भीमा डार्क रेड	उन्नत किस्म का आकलन	0.4	05
5.	बैगन	छत्तीसगढ़ सफेद बैगन -1	उन्नत किस्म का आकलन	0.4	04
6.	धान	कंचन - 64	धान में आभासी कंण्डवा रोग नियंत्रण हेतु समन्वित प्रबंधन का आकलन	0.4	04
7.	धान	स्वर्णा	धान में झुलसा रोग नियंत्रण हेतु समन्वित प्रबंधन का आकलन	0.4	04
8.	मछली	रोहू, कतला, मृगल	ग्रामीण तालाब में मत्स्य बीज उत्पादन का आकलन	0.5	04
योग				4.7	30

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (हे.)	लाभार्थी
1.	सोयाबीन	जे.एस.97-52	सीड कमफर्टीलाइजर ड्रील से सोयाबीन की कतार बोनी का प्रदर्शन	5.0	13
2.	धान	राजेश्वरी	सीड कमफर्टीलाइजर ड्रील से धान की कतार बोनी का प्रदर्शन	5.0	13
3.	धान	राजेश्वरी	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	5.0	12
4.	सोयाबीन	जे. एस. 97-52	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	5.0	12
5.	सेम	छत्तीसगढ़ सेम -1	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	0.4	05
6.	धान	पूसा बासमती	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	5.0	12
7.	गाय	देशी	नीम एवं करंज तेल का बाह्य परजीवि नाशक के रूप में प्रभाव का प्रदर्शन	12 पशु	12
योग				25.4	79

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (आदिवासी उप परियोजना अंतर्गत)

क्र.	फसल	किस्म	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (हे.)	लाभार्थी
1.	अरहर	एल.आर.जी.- 41	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	8.0	20
2.	उड़द	टी.ए.यू. - 1	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	4.0	10
योग				12	30

समूह फसल प्रदर्शन

क्र.	फसल	किस्म	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (हे.)	लाभार्थी
1.	अरहर	एल.आर.जी.- 41	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	20	50
2.	मूंग	HUM - 16 SML - 668	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	20	50
योग				40	100

कृषकों एवं कृषक महिलाओं के लिए प्रशिक्षण

क्र.	विषय	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी
1.	फसल उत्पादन	4	1	80
2.	पौध संरक्षण	4	1	70
3.	उद्यानिकी	4	1	60
4.	मृदा विज्ञान	4	1	60
5.	पशुपालन	4	1	60
6.	मत्स्यकी	4	1	60
7.	कृषि अभियांत्रिकी	4	1	60
योग		28	7	430

विस्तार गतिविधियाँ

विषय	संख्या	लाभार्थी
वैज्ञानिक का खेतो में भ्रमण	25	30
केन्द्र पर कृषको का भ्रमण	200	200
लाईफ योजना अंतर्गत मनरेगा में 100 दिन काम कर चुके कृषको को प्रशिक्षण	01 (6 दिवसीय)	30
पशु स्वास्थ्य शिविर	01	50
योग	227	310

बीजोत्पादन कार्यक्रम
(कृषि विज्ञान केन्द्र प्रक्षेत्र में खरीफ 2016 -17 में बीज उत्पादन)

क्र.	फसल	किस्म	उत्पादित बीज का प्रकार	रकबा (हे.)
1.	अरहर	आशा	प्रमाणित	2.0
2.	सोयाबीन	जे. एस. 95-60	आधार	2.0
3.	सोयाबीन	जे. एस. 97 - 52	आधार	7.0
योग				11.0

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
Agrisearch with a human touch

बुक-पोस्ट
भारत शासन सेवार्थ

कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा
जिला-कबीरधाम (छ.ग.)
पिन-491995
फोन/फैक्स 07741-299124
E-mail: kvkkawardha@yahoo.in

प्रति,
श्री/श्रीमती/डॉ. ....
....
....

उन्नत कृषि — समृद्ध किसान

इंदिरा किसान मितान
इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय
कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा, जिला-कबीरधाम (छ.ग.)

अंक-26 — त्रैमासिक पत्रिका, जुलाई,अगस्त, सितम्बर 2018 — वर्ष-11

संपादक मंडल
संरक्षक : डॉ. एस.के.पाटिल
कुलपति, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
मार्गदर्शक : डॉ. ए.एल. राठौर
निदेशक विस्तार सेवाऐं, इं.गां.कृ.वि.रायपुर (छ.ग.)
प्रेरणा स्त्रोत : डॉ. अनुपम मिश्रा
निर्देशक- ICAR-ATARI जोन-9 जबलपुर (म.प्र.)
प्रकाशक एवं प्रधान संपादक :
डॉ. बी.पी.त्रिपाठी
वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा जिला-कबीरधाम (छ.ग.)
संपादक : श्री बी.एस. परिहार
विषय वस्तु विषेशज्ञ सस्य विज्ञान
सह संपादक :
इं.टी.एस.सोनवानी
विषय वस्तु विषेशज्ञ कृषि अभियांत्रिकी
कु.मनीषा खापर्डे
विषय वस्तु विषेशज्ञ मात्स्यिकी
श्री पी.के.सिन्हा
प्रक्षेत्र प्रबंधक
श्री वाई.के. कौशिक
कार्यक्रम सहायक (कम्प्यूटर)

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
Agrisearch with a human touch

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा एवं डी.एफ.आई.डी. – सी.सी.आई.पी. के संयुक्त तत्वाधान में जलवायु अनुकुल कृषि विषय पर एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण का आयोजन कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा के प्रशिक्षण कक्ष में दिनांक 13.06.2018 को आयोजित किया गया। जिसका मुख्य उद्देश्य जलवायु अनुकुल खेती को बढ़ावा देना है। जिससे जलवायु परिवर्तन से होने वाले नुकसान से बचा जाये। इस तारतम्य में कार्यक्रम की शुरूआत डॉ. बी.पी. त्रिपाठी, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख, कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा ने कृषि विज्ञान केन्द्र की प्रमुख गतिविधियों एवं जलवायु अनुकुल खेती तथा जलग्रहण की मुख्य उद्देश्य जिससे किसान खेत का पानी खेत में एकत्रित कर भूजलस्तर को सुरक्षित रखना आदि विषय पर विस्तृत जानकारी दी। कार्यक्रम की आगामी कड़ी में डॉ. जी. के. दास, प्रोफेसर एवं प्रमुख, एग्रोमेट्रोलॉजी, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर द्वारा छत्तीसगढ़ के मैदान एवं उनका स्वरूप/सस्यक्रम विषय पर विस्तृत जानकारी दी। डॉ. आर.के. द्विवेदी, अधिष्ठाता, संत कबीर कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र, कवर्धा ने जलवायु अनुकुल में समन्वित कृषि प्रणाली का महत्व बताया एवं डी.एफ.आई.डी. – सी.सी.आई.पी. के सदस्यों द्वारा मनरेगा के माध्यम से जलवायु संवेदनशील विकास हेतु अधोसंरचना निर्माण के विषय में विस्तृत जानकरी दी। कार्यक्रम के दरम्यान जिले के 50 प्रगतिशील नवोन्वेशी कृषक सक्रिय रूप से उपस्थित रहें। कार्यक्रम के अंत श्री बी. एस. परिहार द्वारा सभी कृषकों का स्वमूल्यांकन भी किया गया। डॉ. बी.पी. त्रिपाठी ने बताया कि इस कार्यक्रम से निश्चय ही कृषकों को लाभ मिलेगा और कृषकों की आय दुगुनी करने में मील का पत्थर साबित होगा।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा मत्स्य पालको को दिया गया प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा एवं प्रेरक समूह के संयुक्त तत्वाधान में कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा में एक दिवसीय मत्स्य पालक कृषक प्रशिक्षण सह संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 23.05.2018 को किया गया है। जिसमें मत्स्य पालक को मछली पालन के विषय में जानकारी प्रदान की गई, कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा में वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. बी.पी. त्रिपाठी ने कृषि विज्ञान केन्द्र की प्रमुख गतिविधियों एवं मछली पालन का कृषक की आय दुगुनी करने में कैसे कारगर सिद्ध होगा यह बताया कुमारी मनीषा खापर्डे, विषय वस्तु विशेषज्ञ, मात्स्यिकी ने पालने योग्य मछली प्रजातियों के बारे में बताते हुए मिश्रित मछली पालन की सम्पूर्ण जानकारी कृषको को दी। डॉ. बी. आर. होन्नानंदा, सहायक प्राध्यापक,मात्स्यिकी महाविद्यालय, कवर्धा ने मछली में होने वाले प्रमुख बिमारियों एवं निदान के विषय में जानकारी दी एवं श्री दुष्यंत दामले सहायक प्राध्यापक,मात्स्यिकी महाविद्यालय, कवर्धा ने समन्वित मछली पालन विषय में कृषकों सें चर्चा से प्रशिक्षण के अंत में कृषि विज्ञान केन्द्र का भ्रमण कराया जिसमें उन्होने समन्वित मछली पालन प्रणाली के अंतर्गत मछली सह–बत्तख पालन ईकाई का अवलोकन किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में 25 से अधिक कृषक उपस्थित थे।

JULY TO SEPTEMBER 2018-19

विगत तीन माह की गतिविधियाँ

किसानों ने सुना आय दोगुना करने प्रधानमंत्री की वार्ता

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा में एक दिवसीय वेबकास्टिंग के द्वारा प्रधानमंत्री मोदी ने कृषकों से 20 जून 2018 को वार्तालाप किया गया। जिसमें कबीरधाम जिले के लगभग 150 कृषकों ने भाग लिया। कार्यक्रम में वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख, डॉ. बी.पी. त्रिपाठी द्वारा कृषकों का प्रधानमंत्री के उद्बोधन को ध्यानपूर्वक को सुनने हेतु आग्रह किया। किसानों द्वारा किये जा रहे खेती के बारे में वार्तालाप किये एवं समन्वित खेती को उद्बोधन करते हुए किसानों को सलाह दिया। प्रधानमंत्री का उद्बोधन मुख्य रूप से 2022 तक किसानों की आय में दोगुना करना है। इसके अलावा उन्होने जैविक खेती, सहकारी समितियों को बढ़ावा देना, मधुमक्खी पालन, दुग्ध उत्पादन, मत्स्य पालन, बागवानी इत्यादि को बढ़ावा देने हेतु देश भर के किसानों को आग्रह किया। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख, डॉ. बी.पी. त्रिपाठी द्वारा किया गया। इस दौरान कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा के वैज्ञानिक इंजी. टी.एस. सोनवानी एवं श्री बी.एस. परिहार आदि उपस्थित थे।

कृषक संगोष्ठी का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा में राष्ट्रीय दलहन एवं तिलहन मिशन योजनांतर्गत खरीफ पूर्व कृषक संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 20.06.2018 को कृषि विज्ञान केन्द्र के सभागार में किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री संतोष पटेल, अध्यक्ष, जिला पंचायत कबीरधाम एवं डॉ. बी. पी. त्रिपाठी, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख, कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा उपस्थित रहे। कार्यक्रम की शुरूआत डॉ. बी.पी. त्रिपाठी ने कृषि विज्ञान केन्द्र के गतिविधियों जैसे प्रक्षेत्र परीक्षण, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन एवं कृषक प्रशिक्षण की विस्तृत जानकारी दी। साथ ही किसानों को राष्ट्रीय दलहन एवं तिलहन मिशन अंतर्गत कबीरधाम जिले की समुह प्रदर्शन की जानकारी दी। मुख्य अतिथि श्री संतोष पटेल जी ने कहा कि जिले में विगत तीन वर्षो में सोयाबीन की उत्पादन में कमी को देखते हुए किसानो को अच्छे बीज की बुआई करने की सलाह दी। इस वर्ष राष्ट्रीय दलहन एवं तिलहन मिशन योजनांतर्गत समूह प्रदर्शन फसल अरहर 50 हेक्टेयर, सोयाबीन 40 हेक्टेयर एवं मूंगफली 10 हेक्टेयर में लिया गया है। जिसका वितरण माननीय जिला पंचायत अध्यक्ष श्री संतोष पटेल द्वारा किया गया। उक्त कार्यक्रम में जिले के 100 कृषक एवं कृषि विज्ञान केन्द्र,कवर्धा के इंजी. टी. एस. सोनवनी एवं वैज्ञानिक श्री बी.एस.परिहार उपस्थित रहे।

प्रक्षेत्र परिक्षण

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (हे.)	लाभार्थी
1.	धान	राजेश्वरी	धान की कतार बोनी से फसल प्रबंधन का आकलन	0.8	04
योग				0.8	04

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

क्र.	फसल	किस्म	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (हे.)	लाभार्थी
1.	सेम	छत्तीसगढ़ सेम 1	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	0.4	5
2.	धान	राजेश्वरी	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	5.0	12
3.	धान	राजेश्वरी	सीड कमफर्टीलाइजर ड्रील से धान की कतार बोनी का प्रदर्शन	5.0	12
4.	सोयाबीन	जे.एस.97-52	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	5.0	12
योग				15.4	41

कृषकों एवं कृषक महिलाओं के लिए प्रशिक्षण

क्र.	विषय	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी
1.	फसल उत्पादन	4	1	90
2.	पौध संरक्षण	4	1	88
3.	उद्यानिकी	4	1	87
4.	मृदा विज्ञान	4	1	86
5.	पशुपालन	4	1	84
6.	मत्स्यकी	4	1	83
7.	कृषि अभियांत्रिकी	4	1	82
योग		28	7	600

विस्तार गतिविधियाँ

विषय	संख्या	लाभार्थी
वैज्ञानिक का खेतो में भ्रमण	10	20
केन्द्र पर कृषको का भ्रमण	100	100
योग	110	120

जुलाई

फसलोत्पादन एवं पौध संरक्षण

- धान की रोपाई कतार में करें। इससे कृषि क्रियाओं को रोकने में सहायता होती है तथा पौध संख्या पर्याप्त रहती है।
- रोपा धान में नींदानाशक अंकुरण पूर्ण पाइरेजोसल्फूरॉन या ऑक्सिडायर्जिल या एनीलोफास या ब्यूराक्लोर या पेन्डी मेथेलिन का छिड़काव करें।
- खरपतवार नाशी दवा का छिड़काव फ्लैटफैन नोजल द्वारा करें।
- सोयाबीन में खरपतवार नियंत्रण हेतु अंकुरण पूर्व एलाक्लोर या पेन्डीमेथिलिन या मैट्रीबुजिन का छिड़काव अनुशंसित मात्रा में करें।
- उकठा ग्रसित क्षेत्रों में अरहर के साथ ज्वार की मिलवाँ खेती करने से अरहर में उकठा (विल्ट) रोग कम लगता है।

उद्यानिकी

- नए फल वृक्षों को लगाने का कार्य आरंभ करें।
- केले के पौधे की रोपाई का कार्य आरंभ करें।
- सब्जियों के तैयार पौधो का रोपण करें।
- सेवंती के नए सकर्स से कटिंग कर पौध तैयार करें।
- गेंदा के पौध तैयार करें।
- नर्सरी तैयार होने के अरांत टमाटर, मिर्च, बैगन एवं फूलगोभी की रोपाई करें।
- अदरक, हल्दी, भिण्डी एवं बरबट्टी की निराई गुड़ाई एवं पानी न गिरने पर सिंचाई की समुचित व्यवस्था करें।

पशुपालन -

- वर्षाजनित रोंगों से बचाव के उपाय नहीं भूलें। अंतः परजीवी व कृमि नाशक घोल या दवा देने का समय भी यही है।
- संक्रामक रोगो से बचाव हेतु टीकाकरण अवश्य करायें।
- पशु ब्याने के दो घण्टे के अंदर नवजात बछड़े व बछड़ियों को पीयुष अवश्य पिलायें।

अगस्त

फसलोत्पादन एवं पौध संरक्षण

- मक्का की पत्तियों में झुलसन शुरू होने पर मेन्कोजेब/क्लोरोथेलिनिल तामयुक्त फफूंदनाशक दवा का छिड़काव 15 दिनों के अंतराल में 2 बार करना चाहिए।
- धान के खेत में लगातार पानी भरकर न रखें।
- रोपा लगाने के पूर्व धान के थरहा की जड़ो को क्लोरपायरीफास 20 ई.सी.दवा का 1 मि.ली. की पानी तथा 2 किलो यूरिया मिलाकर 3-4 घण्टे डुबोकर रोपा लगाएँ या नर्सरी खेत में कार्बो यूरॉन 33 किलो/हे.की दर से थरहा निकालने के 4 दिन पहले देवें।
- देर हो जाने के कारण यदि धान की रोपाई इस माह करनी पड़ रही है तो पौधे की दूरी कम रखें व 3-4 पौधों का उपयोग करें।
- खेत में हरी काई का प्रकोप दिखे तो पानी को निकाले।
- खेत में जिस जगह से पानी अन्दर जाता है, वहाँ कॉपर सल्फेट को पोटली में बांधकर रखें।
- अरहर में पत्ती मोड़क एवं भृंग इत्यादि कीटों के नियंत्रण हेतु प्रोफेनोफास 50 ई.सी.1.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- धान में यूरिया का छिड़काव करने के पूर्व खेत में पानी की मात्रा कम कर देवें।

उद्यानिकी

- अमरूद, नीबू एवं अन्य वृक्षों में गूटी बांधे तथा पिछले माह बांधी गई गुटी को मातृ पौधों से अलग कर प्लास्टिक थैली में रोपण करें।
- डहेलिया के कंद से निकले नवीन पौधों को 4 - 6 इंच की कटिंग कर नए पौधे तैयार करें।
- खरीफ प्यान को खेत में रोपाई करें।
- सेमी, बरबट्टी को खेत में लगावें।

पशुपालन

- बरसात के मौसम में पशु घरों को सुखा रखें एवं मक्खी रहित करने के लिए नीलगिरि या निम्बू घास के तेल का छिड़काव करें।
- पशुओं को खनिज मिश्रण 30-50 ग्राम प्रतिदिन दें। जिससे पशु की दूध उत्पादन और शारीरिक क्षमता बनी रहें।

सितम्बर

फसलोत्पादन एवं पौध संरक्षण

- तना छोदक के लिए फेरोमोन ट्रेप उपयोग करें या लाइट ट्रेप द्वारा भी व्यस्कों की संख्या को कम किया जा सकता है।
- भूरा माहो के नियमित प्रकोप वाले स्थानों पर फोरट का इस्तेमाल न करें।
- कीट प्रकोप की तीव्रता होने पर इमिडाक्लोपिड 125 मि.ली. या इथीप्रोल + इमिडाक्लोप्रिड 150 मि.ली. दवा का उपयोग करें।
- धान की फसल में झुलसा रोग के लक्षण नाव आकार के धब्बे के रूप में दिखते ही ट्राइसाइक्लोजोल (0.6 ग्रा./ली.पानी) आइलोप्रोथि योलेन (1 मि.ली./ली.पानी)/ टेबुकोनाजोल (1.5 मि.ली. /ली.पानी) में से किसी एक फफूंद नाशक दवा का छिड़काव दोपहर तीन बजे के बाद करें तो रोग का प्रभावी नियंत्रण होना।
- जीवाणु जनित झुलसा रोग के लक्षण दिखने पर यदि पानी उपलब्ध हो तो खेत से पानी निकालकर 3-4 दिन तक खुला रखें तथा 25 किलो पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से भुरकाव करें।

उद्यानिकी

- अदरक एवं हल्दी में मिट्टी चढ़ाए।
- बेलदार एवं लतावाली सब्जियों में तुरंत सहारा देने का कार्य करें एवं मिट्टी चढ़ाएँ।
- सेवंती, डहेलिया के तैयार पौधों को खेत में लगाएँ।

पशुपालन

- चारे का पर्याप्त और उपयुक्त भण्डारण सूखे व ऊँचे स्थान पर करें।
- दुग्ध ज्वर से दुधारू पशुओं को बचाने के लिए गाभिन अवस्था में उचित मात्रा में सूर्य की रोशनी मिलनी चाहिए। साथ ही विटामिन ई व सिलेनियम का टीका प्रसव उपरांत पशुचिकित्सक की सलाह से लगवाना चाहिए।
- पानी के साथ 5-10 ग्राम चूना मिलाकर या कैल्शियम फास्फेरस का घोल 70 से 100 मि.ली. प्रतिदिन भी दिया जा सकता है।